

# गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-६५

नित नवल ललिता झा

६५

विदेह | गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय | खण्ड-६५

विदेह | आलोचना-संस्करण

# गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-६५

‘नित नवल ललिता झा’ : भोजनक शब्द, साहित्य आ लोकजीवन

समीक्षक आ सम्पादक : आशीष अनचिन्हार

विदेह • २०२६

साहित्यिक समीक्षा आ सम्पादकीय विवेचन

## प्रकाशन-विवरण

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड ६५ । समीक्षक आ सम्पादक :  
आशीष अनचिन्हार ।

समीक्षाधीन पोथी : गजेन्द्र ठाकुर । 'नित नवल ललिता झा' । २०२६ ।

प्रथम प्रकाशन : २०२६ । भाषा : मैथिली । मुद्रण-विन्यास : ६ × ९ इञ्च ।

© २०२६ गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर । सर्वाधिकार सुरक्षित ।

## सम्पादकीय भूमिका

भोजनसँ सम्बन्धित मैथिली शब्द-सम्पादक अध्ययनमे वस्तु, क्रिया, संस्कृति आ भाषा एक-दोसरसँ जुड़ल अछि । गजेन्द्र ठाकुर द्वारा डॉ. ललिता झाक ग्रन्थक बारहो अध्यायक विवेचन एहि खण्डक समीक्षाधीन विषय अछि ।

एहि समालोचनामे साहित्यिक शब्दसाक्ष्य, घर-गामक वास्तविक व्यवहार आ ध्वनि-शब्दरचनाक नियमक प्रमाण अलग मानल गेल अछि । पाठक लेल गजेन्द्रक विवेचनक सबल स्थल आ जाँचबाक शेष प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ प्रस्तुत अछि ।

समालोचनाक मूल आधार गजेन्द्र ठाकुरक उक्त प्रकाशित अध्ययन अछि । पुस्तकमे उपस्थित साहित्यिक व्याख्याक मूल्याङ्कन ओकर अपन पाठ-विन्यास, सन्दर्भ आ प्रमाणक अनुसार कएल गेल अछि । मूल पुस्तकक सम्पूर्ण पाठ एहि खण्डमे पुनर्मुद्रित नहि अछि ।

## विस्तृत अनुक्रमणिका : खण्ड ६५

|                                                    |   |
|----------------------------------------------------|---|
| १. भोजनक शब्दसँ मिथिलाक जीवन धरि.....              | ४ |
| २. भारतीय परम्परासँ मैथिल भोजनक विशिष्टता.....     | ४ |
| ३. साहित्यिक प्रमाणक तीन कालखण्ड.....              | ५ |
| ४. उपकरणक शब्द : वस्तु, सामग्री आ कारीगरी.....     | ६ |
| ५. आधार-सामग्री आ भोजनक कार्य-व्यापार.....         | ६ |
| ६. ध्वनि, शब्दरचना आ प्रत्ययक विवेचन.....          | ७ |
| ७. शब्दक उदाहरण : अर्थक सूक्ष्म भेद.....           | ८ |
| ८. भोजन-परम्पराक सामाजिक पाठ : पुनःमूल्याङ्कन..... | ८ |
| ९. परिशिष्ट आ स्रोत-परीक्षणक उपयोगिता.....         | ९ |
| १०. समग्र आलोचनात्मक निर्णय.....                   | ९ |

## १. भोजनक शब्दसँ मिथिलाक जीवन धरि

गजेन्द्र ठाकुरक 'नित नवल ललिता झा' एकटा विशिष्ट ग्रन्थक विवेचन अछि। डॉ. ललिता झाक 'मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली'मे केवल खाद्य-पदार्थक नाम नहि, भोजनक साधन, बनावट, पाक-विधि, अवसर, व्यवहार आ भाषिक संरचनाक प्रश्न अन्तर्भुक्त अछि। एहि विषयकेँ हलुक घरेलू परिचय मानि लेनाइ आलोचनाक पहिल भूल होएत। भोजनसँ जुड़ल शब्द खेत, ऋतु, स्त्री-श्रम, व्यवसाय, जातीय सम्बन्ध, पूजाविधि आ विनिमयक इतिहास दैत अछि। गजेन्द्रक समीक्षाक मूल्य एतहि अछि जे ओ शब्दक पीछे वस्तु आ वस्तुक पीछे समाजकेँ खोजैत छथि।

समीक्षक अध्ययनकेँ विषय-प्रवेश, बारह अध्याय, उपसंहार आ परिशिष्टक वास्तविक क्रममे पढ़ैत छथि। एहि पद्धति सँ पुस्तकक बौद्धिक स्थापत्य स्पष्ट होइत अछि। पहिल तीन अध्याय भोजनक सामाजिक इतिहास बनबैत अछि; दोसर तीन साहित्यिक साक्ष्य संग जोड़ैत अछि; सातमसँ नवम अध्याय लोकप्रयोगक घनिष्ठ शब्दक्षेत्र अछि; अन्तिम तीन ध्वनि आ शब्दरचनाक व्याकरणिक व्याख्या दैत अछि। ई तीन-चार स्तरक अन्तरकेँ देखब गजेन्द्रक एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि।

मुदा आलोचनाक असल परीक्षा कोनो अध्यायक केवल यथाक्रम परिचय देब नहि। भोजनक व्यवहार बदललासँ शब्दक अर्थ, रूप आ सामाजिक प्रतिष्ठा कोना बदलैत अछि, ओकर साक्ष्य की अछि, आ साहित्यिक पाठसँ लोकजीवनक बारेमे कतबा निष्कर्ष निकालल जा सकैत अछि—एहि तीन प्रश्न पर स्वतंत्र विचार आवश्यक अछि। एहि पुनर्पाठक प्रधान उद्देश्य एही प्रश्नक जाँच अछि।

## २. भारतीय परम्परासँ मैथिल भोजनक विशिष्टता

ग्रन्थक पहिल अध्याय पर गजेन्द्रक चर्चा पर्यावरण आ खाद्यव्यवहारक सम्बन्ध सँ शुरू होइत अछि। मौसम, नदी, कृषि, वनस्पति आ पशुधन भोजनक उपलब्धताकेँ प्रभावित करैत अछि। किन्तु समाज के खाएत, की वर्जित मानत आ कोन प्रसंगमे कोन भोजन देत—ई निर्णय पर्यावरण मात्र नहि करैत। भोजनक सांस्कृतिक अर्थ आर्थिक सामर्थ्य, धार्मिक आचार, राजनीतिक सम्पर्क आ पीढ़ीक अनुभव सँ बनैत अछि। गजेन्द्रक विवेचन एहि बहुकारणात्मकता दिस उचित संकेत करैत अछि।

दोसर अध्यायमे भात, चूडा, दही, मडुआ, मकइ, साग, माछ आ अनेक स्थानीय खाद्यक उल्लेख मैथिल जीवनक विविधता देखबैत अछि। एहि विविधताकें स्थिर 'परम्परागत थारी' बनाकऽ देखेनाइ तर्कसंगत नहि। दैनिक भोजन आ पर्वक भोजन अलग अछि; समृद्धि आ अभावक भोजन अलग; नदीक निकट आ सूखल भूभागक उपलब्धता भिन्न। गजेन्द्र एकरे कारण 'प्रधान'कें 'एकमात्र' नहि बुझबाक सावधानी रखैत छथि। ई छोट भाषिक सावधानी सामाजिक इतिहासक दृष्टिऽ पैघ अछि।

तेसर अध्यायमे उपकरणक रूपान्तर समाजक गति देखबैत अछि। उक्खरि-मूसर, ढेकी-जाँत, माटिक पात्र अथवा पीढ़ीक समानान्तर मिल, प्रेशरकुकर आ नव वासनक प्रवेश मात्र वस्तुक विनिमय नहि; श्रमक समय, देहक कष्ट, घरेलू काजक वितरण आ शब्दक आयु बदलबाक संकेत अछि। एतय अध्ययनकें केवल 'पुरान वस्तु लुप्त भऽ रहल'क शोकमे नहि रोकब चाही। नव उपकरणक लाभ आ पुरान शब्दक सांस्कृतिक स्मृति दुनूकें समान गंभीरता चाही।

### ३. साहित्यिक प्रमाणक तीन कालखण्ड

चतुर्थ अध्यायक चर्यापद, ज्योतिरीश्वरक 'वर्णरत्नाकर' आ आरम्भिक साहित्यक सन्दर्भ भोजनशब्दक लिखित जीवन पर प्रकाश दैत अछि। गजेन्द्र एहि उद्धरणसभक अर्थक विवेचन करैत काल शब्दक साहित्यिक प्रयोग आ वास्तविक भोजन-पद्धतिक बीच अन्तर मानैत छथि। ई अन्तर अनिवार्य अछि। काव्य-पाँतिमे कोनो व्यञ्जनक नाम आएब एकटा पाठसाक्ष्य थिक; ओ व्यञ्जन प्रत्यक्ष समाजमे कहिया, कोना आ कतबा व्यापक छल, एकर अलग प्रमाण चाही।

पञ्चम अध्यायमे विद्यापति आ मध्यकालीन साहित्य भोजनकें नैतिक सम्बन्धक भाषामे बदलैत अछि। अतिथि-सत्कार, खीर-खाँड, दही-घृत वा भेंटक उदाहरण पदार्थक नामसँ आगू बढैत अछि। एहि प्रसंगमे आलोचकक चुनौती ई अछि जे रूपक-प्रयोगकें शब्दक प्राथमिक अर्थसँ भिन्न पहचानल जाए। प्रेमक पदमे भोजन-सामग्रीक उल्लेख वास्तविक पाक-विधिक सूची नहि; ओ भावक वाहक सेहो भऽ सकैत अछि। गजेन्द्रक अध्यायवार पठन एहन पाठभेद बुझबाक आधार दैत अछि।

षष्ठ अध्याय आधुनिक साहित्यक महाकाव्य, कविता, कथा, नाटक, निबन्ध आ लोकवचन धरि विस्तृत अछि। एतय सामग्रीक प्रचुरता अपनाके चुनौती बनैत अछि। केवल उद्धरण गनबाक बदला ओकर विधागत काज पहचानेब जरूरी अछि। कथामे भोजन वर्ग-अन्तर खोलि सकैत अछि; नाटकमे सामूहिक मंचीय

क्रिया बनि सकैत अछि; लोकोक्तिमे सामाजिक निर्णयक छोट सूत्र होइत अछि। गजेन्द्रक विवेचन एहि उपयोगक विविधता दर्शबैत अछि, मुदा एकहि शब्दक कालान्तरगत रूपान्तरक तालिकाबद्ध परीक्षण अगिला अनुसन्धान लेल आवश्यक अछि।

## ४. उपकरणक शब्द : वस्तु, सामग्री आ कारीगरी

सप्तम अध्यायमे ललिता झा उपकरणकें धातु, प्रस्तर, मृत्तिका, काष्ठ, बाँस आ तृणक आधारपर वर्गीकृत करैत छथि। गजेन्द्र ई वर्गीकरणक साहित्यिक उपयोगिता पर ध्यान देइत छथि। एकहि पात्रक नाम सामग्री बदललासँ बदलि सकैत अछि; पात्रक आकार एके रहितो ओकर काज बदलि सकैत अछि। कखनो निर्माणक कारीगरक शब्द आ गृहिणीक उपयोगक शब्द अलग होइत अछि। कोशकारक लेल ई सभ सूचनाकें अलग-अलग नोंधब आवश्यक अछि।

‘काँस/काँसा’, ‘पीढी’, ‘सूप’ आ एहन अनेक शब्दक विवेचनमे गजेन्द्रक प्रश्न उल्लेखनीय अछि : नाम सामान्य वस्तु कें बुझबैत अछि अथवा विशिष्ट उपयोगकें? जँ ‘सूप’ अन्न फटकवाक उपकरण अछि तँ ओकर बनावट, क्रियापद्धति आ सम्बन्धित क्रियापदक विवरण अर्थक अंग अछि। स्थिर परिभाषा बनबैत समय लोककर्मक गतिशीलता कखनहु नहि छूटय। चित्र आ स्थानीय उच्चारणक अभिलेख जोडलासँ एहि कोशक प्रायोगिक बल बढत।

उपकरणक शब्दसँ श्रमक सामाजिक इतिहास पढ़बाक बहुत सम्भावना अछि। जाँत पर अनाज पीसब, ढेकी चलाएब आ भोजन परोसब कोन समूह करैत छल, एकर उत्तर केवल वस्तुक नाम नहि दैत। समाजशास्त्रीय साक्ष्यक संग शब्दविज्ञान जोडब पडत। गजेन्द्र एहि दिशामे संकेत करैत छथि; पद्धतिक अगिला विकास क्षेत्रीय अध्ययन आ वक्ताक विवरणसहित शब्द-सूची बना सकैत अछि।

## ५. आधार-सामग्री आ भोजनक कार्य-व्यापार

अष्टम अध्यायमे अन्न, दलिहन, कन्द-मूल, दुग्ध, मिष्टान्न आ अवसरविशेषक सामग्रीकें वर्गीकृत कएल गेल अछि। एहि वर्गमे ‘मूल’, ‘आनुषंगिक’ आ ‘विशेष’क अर्थ लोकव्यवहारसँ निर्धारित अछि, पोषण-विज्ञानक सर्वमान्य श्रेणीसँ नहि। गजेन्द्र एहि भेदकें स्पष्ट करैत छथि। लोकसंज्ञामे ‘विशेष’ कहल पदार्थ

कोनो दोसर समुदायक दैनिक आहार भऽ सकैत अछि; एहि कारण परिभाषाक सामाजिक स्थिति बताओल जाए तँ आलोचना अधिक वैज्ञानिक होएत।

नवम अध्याय भोजनक क्रियाक कोश अछि। धानक सफाई, सुखेनाइ, उसिनेनाइ, कुटनाइ, छाननाइ, सिझेनाइ, फेंटनाइ, परोसनाइ आ ग्रहण करनाइ—एक क्रिया-शृंखला सँ अनेक शब्द बनैत अछि। ‘अरबा/उसिना’ अथवा ‘खखरी’ जेकाँ पद पदार्थक अवस्था आ प्रक्रिया दूनू व्यक्त करैत अछि। गजेन्द्रक समीक्षा एहि गतिशील शब्दार्थकें ठीक पहिचानैत अछि। परिणाम-आधारित शब्दक व्याख्या केवल परिभाषा नहि, स्थानीय तकनीकक लघु इतिहास सेहो अछि।

एहि अंशक आलोचनात्मक सीमा सेहो ध्यान देबाक योग्य अछि। क्रियारूपक अर्थ प्रादेशिक बोलचाल, वस्तु-विशेष आ प्रसंगपर निर्भर होइत अछि; दू क्रियाक शब्दकोशीय साम्य ओकर पूर्ण प्रतिस्थापनक अनुमति नहि दैत। गजेन्द्र पुस्तकक महत्त्व स्वीकारैत काल एहन अर्थभेद पर प्रश्न करैत छथि। जँ शब्दक संग वास्तविक वाक्य, वक्ता आ प्रक्रियाक क्रम अंकित हो, तँ अध्ययन भविष्यक मौखिक शब्दकोशक आधार बनि सकैत अछि।

## ६. ध्वनि, शब्दरचना आ प्रत्ययक विवेचन

दशम अध्याय ध्वनिविज्ञानकें केवल सैद्धान्तिक सूची नहि रहने दैत। ‘धैल-धैलची’, ‘कठौत-कठौतिया’ जेकाँ उदाहरण उच्चारण, रूपभेद आ वस्तुक आकारक सम्बन्ध देखबैत अछि। गजेन्द्र ठीक ध्यान दैत छथि जे व्युत्पत्तिक अनुमान प्रमाणसहित होएब चाही। संस्कृत अथवा प्राकृतसँ ध्वनि-परिवर्तनक सम्भावना बतबैत काल मध्यवर्ती रूप, समय आ क्षेत्रक जानकारी नहुँ भेटय तँ निर्णय अस्थायी राखब वैज्ञानिक सावधानी अछि।

एकादश अध्यायमे रूढ़, यौगिक आ योगरूढ़ शब्दक भेद उपयोगी अछि। ‘दालि’ आ ‘पूड़ी’क योग सँ बनल शब्दक अर्थ कखनो स्पष्ट होइत अछि, मुदा लोकपरम्परा कोनो शब्दकें अवयवक जोड़सँ अधिक विशिष्ट अर्थ दऽ सकैत अछि। द्वादश अध्यायक उपसर्ग-प्रत्यय पर विचार एहि भाषिक सर्जनशीलताकें विस्तार दैत अछि। प्रत्यय कखनो लघुता, कखनो सम्बन्ध, कखनो रूपान्तरणक संकेत देइत अछि। केवल प्रत्ययक अक्षर चिन्हब पर्याप्त नहि; शब्दक अर्थगत अन्तर जाँचना चाही।

गजेन्द्रक पोथी ध्वनि-विचार आ शब्द-विचारकें स्वतन्त्र अध्याय मानिकऽ प्रस्तुत करैत अछि। एहि सम्मानक महत्त्व अछि, कारण लोकशब्दावलिक संग्रह बहुत बेर भाषिक विश्लेषण बिना सूची बनिकऽ रहि जाइत अछि। तथापि विभिन्न कालक शब्दरूप एकहि भाषिक क्षणक नमूना नहि; काल, भौगोलिक क्षेत्र आ वक्ताक बोलीक भेद सुरक्षित रहय, ई शर्त लगातार स्मरण रखबाक अछि।

## ७. शब्दक उदाहरण : अर्थक सूक्ष्म भेद

गजेन्द्रक समीक्षामे अन्नक नाम आ ओकर प्रसंस्करणक शब्द विशेष अर्थ रखैत अछि। 'अरबा' आ 'उसिना'कें केवल दू प्रकारक चाउर कहि देब सामान्य परिचय होएत; भिजेनाइ, उसिनेनाइ, सुखेनाइ आ कुटनाइक क्रम अर्थक भीतर समाहित अछि। 'खखरी' अथवा 'निरैठ'क अर्थ बुझबाक लेल वस्तुक अवस्था आ स्थानीय व्यवहार अलग चाही। एहन सूक्ष्म नाम केवल शब्दक विविधता नहि, कृषि-आधारित ज्ञानक विभाजन प्रदर्शित करैत अछि।

'काँस' आ 'काँसा' जकाँ रूप सामग्रीक नाम, बासनक पदार्थ आ उच्चारणक सम्बन्धक उदाहरण अछि। कोन ठाम धातुक नाम अछि, कोन ठाम ओकरा सँ बनल पात्र, से निर्भर करैत अछि स्थानीय बोलचाल आ वाक्यपर। 'पीढी'क रूपमे वस्तु आ बैठबाक सामाजिक व्यवस्था एक ठाम भेटैत अछि। गजेन्द्रक विश्लेषण ई सिखबैत अछि जे शब्दक समकक्ष अर्थ खोजब पर्याप्त नहि; सम्बन्धित वस्तु-संस्कृतिक विशिष्टता सेहो आवश्यक अछि।

## ८. भोजन-परम्पराक सामाजिक पाठ : पुनःमूल्याङ्कन

भोजनक परम्परा पर लिखैत काल 'मैथिल' नामक एकटा स्थिर समुदायिक थारीक कल्पना प्रचलित अछि। ललिता झाक सामग्री एहि सरल कल्पनाकें चुनौती दैत अछि, कारण भोजन-सम्बन्धी शब्द क्षेत्र, अवसर, साधन आ वर्ग अनुसार बदलैत अछि। गजेन्द्रक विवेचन एतय साहित्यिक महत्त्व पबैत अछि। पाठक देखैत छथि जे पारम्परिक नामक भीतर व्यवहारक अनेक शक्ति अछि। क्षेत्रीय अन्तरकें कमी नहि, अभिलेखीय सूचना मानल जाए।

भोजनमे स्त्रीक घरेलू श्रमक विवरण शब्दसूचीक मूक पृष्ठभूमि बनि रहबाक खतरा अछि। पाकविधिक शब्दक वास्तविक उपयोगकर्ता, पीढी-दर-पीढी ज्ञानक संचरण आ कामक समय प्रश्नक रूपमे सामने आनल जाए। एहन दृष्टिसँ शब्दविज्ञान सामाजिक इतिहासक संग अधिक सार्थक रूपमे जुड़त। गजेन्द्रक

अध्ययन एहि प्रकारक शोधक दिशा सुझबैत अछि, किन्तु ओकर सम्पूर्ण सामाजिक इतिहास लिखब एहि एक ग्रन्थक सीमा सँ बाहर अछि।

## ९. परिशिष्ट आ स्रोत-परीक्षणक उपयोगिता

ललिता झाक मूल पोथीक उपसंहार, रेखाचित्रवला परिशिष्ट आ अधीत ग्रन्थक सूची पर गजेन्द्र अलग ध्यान दैत छथि। ई केवल औपचारिक समापन नहि। रेखाचित्र शब्दकें वस्तुसँ जोड़ैत अछि; ग्रन्थसूची साहित्यिक साक्ष्यक पुनःपरीक्षणक रास्ता देखबैत अछि। परिशिष्टक वास्तविक क्रम आ मूल ग्रन्थक विषय-सूचीक क्रममे कतहु भेद होए तँ मुद्रित पृष्ठ-साक्ष्य निर्णायक मानबाक आलोचकक नीति उचित अछि।

एहि कृतिक सबल पक्ष लोकजीवनक दुर्लभ शब्द-सम्पदा बचाबयक प्रयत्न अछि। कमजोरीक प्रश्न मानकीकरण आ सत्यापनपर उठैत अछि। समान शब्दक अनेक रूप, एके वस्तुक अनेक नाम, उदाहरणक उपलब्ध क्षेत्र, ऐतिहासिक अनुमान आ वर्तमान उच्चारण—ई सभकें अलग सूचना रूपमे दर्ज करब चाही। गजेन्द्रक आलोचना ई उत्तर सम्पूर्ण रूपसँ नहि देइत, मुदा प्रश्नकें स्पष्ट करैत अछि। प्रश्नक स्पष्टता सेहो गम्भीर समीक्षाक उपलब्धि होइत अछि।

## १०. समग्र आलोचनात्मक निर्णय

‘नित नवल ललिता झा’क विशेषता अछि जे गजेन्द्र ठाकुर भोजनक माध्यमँ शब्द, इतिहास आ समाजक संवाद पढ़ैत छथि। अध्ययनक प्रमुख गुण मूल पोथीक बारहो अध्यायक क्रम, प्रामाणिक नामावली, रूपात्मक उदाहरण आ साक्ष्यक सीमा सँ परिचित करेनाइ अछि। ई ग्रन्थ न शब्दकोशक प्रतिलिपि अछि, न पकवानक पुस्तकक सामान्य परिचय; ई भाषा-अनुसन्धानक एकटा विषयकें आलोचनात्मक विमर्शक स्थान दैत अछि।

आशीष अनचिन्हारक मूल्याङ्कनमे एहि कृतिक भविष्यगत महत्त्व स्थलविशेषक मौखिक सामग्रीक नूतन परीक्षणसँ जुड़ल अछि। वस्तुक छवि, निर्माणक विवरण, वक्ताक अनुभव, पुरान ग्रन्थक पृष्ठसन्दर्भ आ बदलैत प्रयोगक तिथि जोड़ल जाए तँ शब्दावली केवल संग्रह नहि, शोधयोग्य सांस्कृतिक अभिलेख बनत। गजेन्द्र ठाकुरक विवेचन एहन नव अनुसन्धानक प्रश्न निर्मित करैत अछि; एहि कारण पोथीक स्थान मैथिली भाषिक समालोचनामे सार्थक अछि।

## सन्दर्भ-सूची

ठाकुर, गजेन्द्र । नित नवल ललिता झा । विदेह, २०२६ । (समीक्षाधीन मुख्य पोथी) ।

गजेन्द्र ठाकुरक उक्त ग्रन्थमे विचाराधीन प्रमुख रचनासभ :

१. डॉ. ललिता झा । मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली । प्रथम संस्करण, २०११ ।

# गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-६५

‘मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली’क बारहो अध्यायक पाठ  
भोजनक उपकरण, पदार्थ आ क्रियासम्बन्धी शब्दार्थ  
ध्वनि, शब्दरचना, उपसंहार आ परिशिष्टक विवेचन  
मैथिली साहित्यक स्रोताधारित समीक्षाक व्यापक प्रस्तुति।

मूल पाठ □ विस्तृत आलोचना □ सम्पादकीय चयन



विदेह



विदेह डिजिटल संग्रह